# कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली

# अपील

किसान भाइयों जैसा आपको ज्ञात होगा कि, हमारे दिल्ली क्षेत्र में धान की पराली नहीं के बराबर जलाई जाती, क्योकिं ज्यादातर धान की फसल की कटाई हाथ से होती है एवं पराली पशुओं के चारे में रुप में ब्रिकी हो जाती है, लेकिन हमारे दिल्ली क्षेत्र में धान की मढ़ाई के बाद कुछ अवशेषों को खेत में ही जला देते है, जिससे वो अवशेष खेत में धीरे धीरे जलते हुए अपने गांव के आस-पास के क्षेत्र में धुआ ही धुआ हो जाता है, जो दिल्ली क्षेत्र में वायु प्रदुषण का मुख्य कारण बन जाता है। अतः आप सब से आग्रह है कि बचे हुए फसल अवशेषों का खेत के बाहर या खेती में फैलाकर प्रबंध करें, ताकि भूमि का स्वास्थ्य भी सही बना रहे एवं वातावरण भी प्रदुषण रहित रहें।



## फसल के अवशेषों को जलाने से नुकसान

जब हम बचे हुए फसल के धान के अवशेषों को जलाते है तो धान के एक किलोग्राम अवशेषों से 0.7-4.4 ग्राम मिथेन ($CH_4$) व 0.019-0.057 ग्राम नाइट्रस ऑक्साइड ($N_2O$) गैसों का निष्कासन होता है, इसके अलावा सल्फर डाइ ऑक्साइड, हाइड्रोजन क्लोराइड और डाइ ऑक्साइन्स आदि गैसों का वातावरण एवं मानव स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। धान की पराली को जलाने से अवशेषों से निकलने वाली गैस बहुत ही विषेली एवं हानिकारक होती है, जिससे सांस लेने में तकलीफ, आंखो में जलन और एलर्जी जैसी कई बीमारियों के होने का खतरा रहता है। इसके अलावा, वर्तमान समय में, जलवायु परिवर्तन, तापमान में बढ़ोतरी, वर्षा का नही होना या अनियमितता से होना और फसल पकने की अवधि में अंतर आदि का प्रमुख कारण बनता जा रहा है।

**आओं हम प्रतिज्ञा करें कि**

**फसल के अवशेषों को हम ना जलायंगे ना ही किसी को जलाने देंगें।**

**इन अवशेषों को भूमि में मिलायेगें, पर्यावरण को प्रदूषण से बचायेगें।।**

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

**फसल अवशेषों को लगाने से आग,**

**पोषक तत्व व मित्र कीट होते है खाक।**

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

**धान की पराली को ना जलाओं।**

**दिल्ली के वातावरण को बचाएं।।**

*********************************************************